In the name of Allah the Most Gracious the Ever Merciful
بسم اللہ الرحمن الرحیم
Press Desk
Ahmadiyya Muslim Jamaat
INTERNATIONAL
(INDIA)
شعبہ پریس اینڈ میڈیا بھارت
Office Press & Media
Ahmadiyya Muslim Jama'at India,
Qadian-143516, Distt.Gurdaspur, Punjab, India.
Mobile: +91-99887 57988
Email: pressamjindia@gmail.com
Tel: +91-1872-500282
ahmadiyya_press ahmadiyyapressindia
(A Registered Religious and Charitable Society in India under the Societies Registration Act XXI 1860)

حوالہ/Ref
تاریخ/Date

जमात – ए – अहमदिया इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को शरियत वाला आख़िरी पैग़म्बर और खातमुन्नबिय्यीन मानती है

हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का पूर्ण अनुसरण तथा आज्ञापालन करने के परिणामस्वरूप, जमात –ए– अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब क़दियानी (अलैहिस्सलाम) को उम्मती पैग़म्बर होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

अहमदिया मुस्लिम जमात के बारे में कुछ लोग ज्ञान के अभाव और ग़लतफ़हमी के कारण यह मानते हैं कि जमात –ए– अहमदिया नाऊज़ुबिल्लाह हज़रत अकदस मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अंतिम पैग़म्बर नहीं मानती है जबकि यह बात बिल्कुल ग़लत है। जमात –ए– अहमदिया पवित्र कुरान के आदेशानुसार इस्लाम के संस्थापक हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अंतिम पैग़म्बर मानती है और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के खातमुन्नबिय्यीन होने पर दिल से विश्वास रखती है।

जमात –ए– अहमदिया मुस्लिमा की मान्यताएं तथा आस्थाएं वही इस्लामी मान्यताएं और आस्थाएं हैं जिनके अनुसार पवित्र कुरान, जो आख़िरी शरियत है, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) द्वारा उतरी है, जिसके बाद अब कोई शरियत नहीं है और न ही कोई नई शरियत वाला पैग़म्बर आएगा। और हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद कोई स्थाई और शरीयत वाला नबी नहीं आएगा। हाँ, परन्तु क़ुरान के नियमानुसार, जो व्यक्ति हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का पूरी तरह से अनुसरण करता है, वह निश्चित रूप से उम्मती नबी का पद प्राप्त कर सकता है।

अल्लाह ताला ने पवित्र क़ुरान में कहा है कि जो कोई भी अल्लाह तआला और इस पैग़ंबर (अर्थात हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का आज्ञापालन करेगा, वह उन लोगों के साथ होगा जिन पर अल्लाह ने ईनाम किया, यानी वह पैग़म्बरों में से होंगे, सिद्दीक़ों (सच्चे लोगों) में से होंगे, शहीदों में से और सालिहीन (नेक लोगों) में से होंगे।

क़ुरान की इस आयत से हमें पता चलता है कि हज़रत अकदस मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का पद इतना ऊंचा है और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की आध्यात्मिक दानशीलता

इतनी प्रभावशाली है कि आप के पूर्ण आज्ञापालन के परिणामस्वरूप, आपके एक उम्मती को पैग़म्बर का पद प्राप्त हो सकता है और यह बात आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की महानता को बढ़ाती है।

जमात –ए– अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब क़दियानी (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया है कि:

"अब आसमान के नीचे केवल एक ही पैग़म्बर और एक ही किताब है, अर्थात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), जो सभी पैग़म्बरों में सर्वश्रेष्ठ हैं और सभी रसूलों में सबसे परिपूर्ण हैं और खातम-उल-अन्बिया और लोगों में सबसे बहतरीन हैं, जिनके अनुसरण से खुदा मिलता है और अंधकार दूर होता है और इसी संसार में सच्ची मुक्ति के लक्षण स्पष्ट दिखाई देते हैं।"

(बराहीने अहमदिया भाग 4, रूहानी ख़ज़ायन खंड 1 प्रष्ठ 557-558, हाशिया दर हाशिया नं 3)

इसी तरह, जमात –ए– अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब क़दियानी (अलैहिस्सलाम) एक अन्य स्थान पर फ़रमाते हैं:

"अतः मैं आश्चर्य से देखता हूं कि यह अरबी पैग़म्बर जिसका नाम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) है, उस पर हज़ार हज़ार दुरुद और सलाम हो, यह किस बुलन्द शान का नबी है। उसकी बुलन्द शान की सीमा ज्ञात नहीं की जा सकती और उसकी प्रभावशीलता एवं पवित्रता का मूल्यांकन करना मनुष्य का काम नहीं है। अफसोस ! कि उसकी कद्र करने का जो हक़ है उस हिसाब से उसके मक़ाम व मर्तबा की क़द्र नहीं की गई। ...वही है जो प्रत्येक दानशीलता का उद्गम है।

(हक़ीक़त-उल-वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन खंड 22 पृष्ठ 118-119)